1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

त्वमस्माकं तव स्मसि।

ऋग्वेद 8/92/32

हे प्रभो! तू हमारा है और हम तेरे हैं।

O God! You are our all in all & we are your divine children, you are ours and we are yours.

वर्ष 39, अंक 50 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 17 अक्टूबर, 2016 से रविवार 23 अक्टूबर, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

ओ३म् ओ३म्

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से

133वाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाणोत्सव

का भव्य आयोजन

रविवार, 30 अक्टूबर 2016

यज्ञ : प्रातः 8.00 बजे

श्रद्धाञ्जलि सभा : मध्याह्न 12.00 बजे तक

स्थान : रामलीला मैदान (तुर्कमान गेट साइड), नई दिल्ली-२

इस विशाल समारोह में आप दलबल, परिवार एवं इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

समय पर आयोजन स्थल पर पहुंचकर कार्यक्रम की सफलता में योगदान दें।

इस अवसर पर स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ''वैदिक विद्वान् पुरस्कार'', डॉ० मुमुक्षु आर्य एवं पं० गुरूदत्त विद्यार्थी स्मृति पुरस्कार'' प्रदान किये जायेंगे।

-: निवेदक :-

महाशय धर्मपाल	अरुण प्रकाश वर्मा	सुरेन्द्र कुमार रैली	सतीश चड्ढा
प्रधान	कोषाध्यक्ष	वरिष्ठ उपप्रधान	कार्यकारी महामन्त्री
011-25937341	9810086759	9810855695	9540041414

संरक्षक : रामनाथ सहगल, विद्यामित्र ठुकराल,मदन मोहन सलूजा, शिव भगवान लाहौटी, ओम प्रकाश घई
उपप्रधान : विक्रम नरुला, उषा किरण आर्य, राजेन्द्र दुर्गा, कीर्ति शर्मा, अजय सहगल
मन्त्री : जोगेन्द्र खट्टर, अभिमन्यु चावला, एस. पी. सिंह, राजीव चौधरी

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पंजी०)

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोन : 23360150

वेद-स्वाध्याय

तेरी लीला

अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावाँ अस्ति देवता विदानः।
न जायमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणुहि प्रवृद्ध।।-ऋ. 1/165/9
ऋषि: **अगस्त्यः।।** देवता: **इन्द्रः।।** छन्द: **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ-आ=अहो, सच है कि **मघवन्**=हे सर्वैश्वर्ययुक्त! **नु ते अनुत्तम्**[1] **न किः**=निःसन्देह ऐसी कोई वस्तु नहीं है जोकि तुझसे अप्रेरित है-जो तुझसे प्रेरित नहीं है, **त्वावान् विदानः देवता न अस्ति**=तेरे समान ज्ञानवाला कोई देवता भी नहीं है, **प्रवृद्ध**=हे परम महान् **न जायमानः न जातः**=न तो कोई उत्पन्न होनेवाली और न कोई उत्पन्न हुई वस्तु है **(तानि) नशते**=जो तेरे उन कर्मो तक पहुँचती है यानि **करिष्या, कृणुहि**=जिन कर्मों को तू करेगा या कर रहा है।

विनय-हे सर्वैश्वर्यशालिन्! मैं आज देख रहा हूँ कि इस विश्व का सब कुछ छोटे-से-छोटा और बड़े-से-बड़ा-तेरे हिलाये हिल रहा है। ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जो तेरी प्रेरणा से प्रेरित नहीं हो रही हो। इस ब्रह्माण्ड-सागर की क्षुद्र और महान्-से-महान् सब लहरें तू ही पैदा कर रहा है। जगत् के अनन्त परमाणुओं में जो एक-एक परमाणु प्रतिक्षण गतिशील है, चींटी से कुंजर तक जो सब प्राणी चेष्टा कर रहे हैं, मनुष्य के वैयक्तिक जीवन और मनुष्य-संघ के समष्टि जीवन में जो नित्य छोटे-बड़े परिवर्तन हो रहे हैं, भूकम्प, वर्षा, वायु, अग्नि, ऋतु आदि रूप से जो आधिदैविक जगत् निरन्तर बदल रहा है-यह एक जगत् क्या, ऐसे-ऐसे जो कोटि-कोटि अनन्त जगत्, जो असंख्यात सूर्य और पृथिवियाँ, इस महाकाश में चक्कर लगा रहे हैं-ये सब-के-सब, तेरी ही दी हुई गति से, तेरी ही प्रेरणा से चल रहे हैं। तू अपनी पूर्ण ज्ञानमयी ठीक-ठीक गति देकर इस सब संसार को नचा रहा है। हम मनुष्य क्या, बड़े-से बड़े ज्ञानी देव भी तेरे असीम ज्ञान का पार नहीं पा सकते। ये सब तेरे ज्ञान को असीम-अनन्त कह-कहकर अपनी अज्ञानता को ही प्रकाशित करते हैं। ज्यों-ज्यों हमारा ज्ञान बढ़ता जाता है त्यों-ज्यों पता लगता जाता है कि तू कितना-कितना महान् है! हे महान्! हे परम महान्!! तेरी महत्ता के आकाश का अन्त हमारा कल्पनापक्षी अपनी ऊँची-से-ऊँची उड़ान से भी नहीं पा सकता; वह हार मानकर, थक-थकाकर, शान्त हो जाता है। तब हम तेरी महत्ता को अनन्त मानकर और तेरी लीला को अगम्य कहकर चुप हो जाते हैं। इतना ही कह सकते हैं कि इस जगत् में जो कुछ पैदा हुआ है, हो रहा है या होगा, उनमें से किसी में भी ऐसी शक्ति नहीं है जो तेरी लीला को समझ सके, जो तेरे द्वारा की जानेवाली या की जा रही लीला के किसी ओर-छोर को पा सके। जो तेरी लीला की अधिक-से-अधिक सच्ची, नजदीकी और पूरी खबर लाता है तो वह यही खबर लाता है कि तेरी लीला अगम्य है, तेरी लीला अगम्य है।

1. अनुत्तम्+आ=अनुत्तमा।

- साभार: वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

मौत का व्रत ! आखिर जिम्मेदार कौन? अन्धविशवास पर एक और बलि

हमारे देश में मीडिया और नेता हर एक मौत के जिम्मेदार को ढूंढ लेते हैं। लाशें मृतक का धर्म उसकी जाति और उसकी मौत का कारण खोज लेते है। कहीं धर्म तो कहीं व्यवस्था को दोषी ठहरा देते हैं। रोहित वेमुला की आत्महत्या के बाद मैंने मनुस्मृति को जलते देखा, अखलाक की हत्या पर अवार्ड लौटाते बुद्धिजीवी देखे। शहीद फौजी वीरसिंह को निचली जाति का होने के कारण उसके अंतिम संस्कार के लिए 2 गज जमीन के लिए भटकते उसके परिजन देखे। टीपू सुल्तान और महाराणा प्रताप की जयंती के लिए झगड़ते नेता देखे पर आज एक 13 साल की जैन परिवार की एक बच्ची की मौत पर या कहो धार्मिक मौत पर सबको खामोश देखा। क्या जैन समुदाय की वोट कम हैं या उसकी मौत को कुप्रथा की भेंट नहीं मानते? आखिर समाज की परम्पराओं के लिए माता-पिता की इच्छाओं के लिए कब तक मासूमों को इन कुप्रथाओं के लिए अपनी जान कुर्बान करनी पड़ेगी? क्या ये सही था कि एक 13 साल कि मासूम लड़की को 68 दिनों का व्रत रखने की अनुमति दी गई? क्यों किसी ने उसको मना नहीं किया, क्यों लोग उसको सम्मान दे रहे थे? क्यों किसी ने इसका विरोध नहीं किया? क्या धार्मिक नेताओं जैन मुनियों को नहीं पता होता है कि किस बात की अनुमति दी जाए और किसकी नहीं? क्या कोई बता सकता है कि 13 वर्ष की इस बच्ची आराधना की मौत का जिम्मेदार कौन है?

अत्यंत कठिन तपस्या वाला व्रत रखने वाली छात्रा का नाम आराधना था। आंध्र प्रदेश में कक्षा आठ में पढ़ने वाली 13 वर्षीय छात्रा आराधना की 68 दिन का निर्जला व्रत पूरा करने के बाद मौत हो गई। आराधना जैन परिवार से थी। जैनियों के पवित्र समय चौमासा के दौरान उसने व्रत शुरू किया था। व्रत पूरा होने के दो दिन बाद आराधना की तबीयत खराब हुई थी जिसके बाद उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया था। घर वालों ने बताया कि हार्ट अटैक से किशोरी की मौत हो गई। बाल तपस्वनी के नाम से मशहूर हुई किशोरी की मौत के बाद उसके अंतिम संस्कार में सैकड़ों लोगों का हुजूम उमड़ा। आराधना की शव यात्रा में करीब 600 लोगों ने भाग लिया। इस यात्रा को शोभा यात्रा नाम दिया गया था, यानि कि एक धार्मिक कुरीति की भेंट चढ़ी एक बच्ची की मौत पर जश्न मनाया जा रहा था। पुलिस के मुताबिक जैन समुदाय से ताल्लुक रखने वाले लक्ष्मीचंद का शहर में गहनों का व्यवसाय है। जिसमें पिछले कुछ दिनों से घाटा चल रहा है। चेन्नई के किसी संत ने इसका समाधान बताते हुए लक्ष्मीकांत को कहा कि यदि उनकी बेटी 68 दिनों का चातुर्मास व्रत रखे तो बिजनेस में मुनाफे के साथ उनका भाग्योदय भी हो जाएगा।

हमारे देश में धर्म के नाम पर न जाने ऐसी कितनी कुप्रथाएं आज भी अपने पैर जामये हुए हैं, जिनके बारे में अधिकतर लोगों को कुछ पता ही नहीं होता है। जैन समुदाय की सदस्य लता जैन का कहना है कि यह एक रस्म सी हो गई है कि लोग खाना और पानी त्यागकर खुद को तकलीफ पहुंचाते हैं। ऐसा करने वालों को धार्मिक गुरु और समुदाय वाले काफी सम्मानित भी करते हैं। उन्हें तोहफे दिए जाते हैं। लेकिन इस मामले में तो लड़की नाबालिग थी। मुझे इसी पर आपत्ति है। अगर यह हत्या नहीं तो आत्महत्या तो जरूर है। कि किशोरी को स्कूल छोड़कर व्रत पर बैठने की अनुमति क्यों दी गई? सब जानते हैं इस प्रक्रिया को चौमासा व्रत या संथारा के नाम से जानते हैं। भगवान महावीर के उपदेशानुसार जन्म की तरह मृत्यु को भी उत्सव का रूप दिया जा सकता है। संथारा लेने वाला व्यक्ति भी खुश होकर अपनी अंतिम यात्रा को सफल कर सकेगा, यही सोचकर संथारा लिया जाता है।

संथारे को जैन धर्म का महत्वपूर्ण हिस्सा बताया जाता है लेकिन आज तक ऐसा एक भी मामला सामने नहीं आया है जब किसी भी बड़े जैन मुनि ने अपना जीवन समाप्त करने के लिए संथारे का मार्ग अपनाया हो। यहां तक कि जैन धर्म के प्रमुख धार्मिक संत आचार्य तुलसी, जिनका 1997 में निधन हो गया था और न ही उनकी धार्मिक विरासत के वारिस आचार्य महाप्रज्ञ, जिनकी 2010 में मृत्यु हो गई थी, दोनों में से किसी ने भी स्वैच्छिक मौत यानि कि संथारा का रास्ता नहीं चुना था, बल्कि दोनों धर्मगुरुओं की मृत्यु लम्बी बीमारी के बाद हुई थी।

कुछ समय पहले राजस्थान हाईकोर्ट ने संथारा को भारतीय दंड संहिता 306 तथा 309 के तहत दंडनीय बताया था और इस प्रथा को आत्महत्या जैसा बताकर रोक लगा दी थी जिसके बाद जैन समुदाय सड़कों पर उतर गया था। 2015 में सुप्रीम कोर्ट ने जैन समुदाय को संथारा नामक धार्मिक परम्परा को जारी रखने की अनुमति दी थी। हालाँकि ऐसा नहीं है कि समस्त जैन समाज इसके पक्ष में था जबकि जैन समाज का एक बड़ा हिस्सा इसके विरोध में भी था किसी ने संथारा को अमानवीय एवं किसी ने धार्मिक परंपरा के नाम पर भूखे रहने को मजबूर किया जाना बताया था।

अब सवाल यह है कि त्योहार और परम्पराओं के नाम पर देश के ज्यादातर लोग धार्मिक हो जाते हैं तथा हिंसा से हर संभव बचने का प्रयास भी करते हैं। जैन समुदाय के लोग अहिंसावादी भी बनते दिखाई दे जाते हैं पर इस तरह की भावनात्मक, शारीरिक, मानसिक, हिंसा में शामिल होते समय इनका विवेक कहाँ सो जाता है? क्या कुप्रथा बंद होने से धर्म को कोई हानि होती है? धर्मगुरुओं को आज सोचना होगा कि हर एक धर्मिक मामला चाहे वह संथारा हो या तीन तलाक, अथवा बली प्रथा हो या ज्यादा बच्चे पैदा करने को लेकर विवाद। क्यों आज इन सबमें न्यायालयों को हस्तक्षेप करना पड़ रहा है! जबकि समाज के अन्दर धर्म की एक सरंचनात्मक कार्य भूमिका होती है धर्म हमें समझाने के वैचारिक रूप देता है अन्य शब्दों में कहें तो धर्म हमें मानवीय अमानवीय दृष्टिकोण पर चिंतन करने का ढांचा देता है जिससे समय के साथ मनुष्य के व्यवहार में परिवर्तन दिखाई देता है। धर्म की एक समाज के अन्दर एक बौद्धिक भूमिका होनी चाहिए न कि परम्परागत तपस्या या उपवास रखने में किसी भी तरह की जोर जबरदस्ती नहीं की जानी चाहिए। यह एक त्रासदी है और हमें इससे सबक लेना चाहिए। इस मामले की पुलिस में शिकायत दर्ज की जानी चाहिए और बाल अधिकार आयोग को कड़ी कार्यवाही करनी चाहिए। एक नाबालिग बच्ची से हम ऐसे किसी फैसले को लेने की उम्मीद नहीं कर सकते जोकि उसकी जिंदगी के लिए खतरा है। आखिर उसकी मौत का भी तो कोई जिम्मेदार होगा?

-सम्पादक

दर्शन योग महाविद्यायल का प्रथम वार्षिकोत्सव

दर्शन योग महाविद्यालय दिनांक 10 नवम्बर 2016 को आर्यवन रोजड़, पो. सागरपुर ता. तलोद, जिला साबरकांठा, गुजरात में अपना प्रथम वार्षिकोत्सव आयोजित कर रहा है। जिसके अन्तर्गत स्वामी सत्यपति जी, स्वामी विवेकानंद जी व स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी के प्रवचन होंगे।

कुरान और हदीस ही सबसे बड़ा संविधान कैसे?

वर्ष 2008 में पेरिस में शरीयत के कानूनों को क्रियान्वित करने के जो अलग-अलग ढ़ंग और रूप हैं, उन पर इस्लामी विद्वानों में खुलकर बहस हुई थी। इस बात पर भी चर्चा हुई कि अनेक ऐसे कानून हैं जिन्हें इस्लाम मान्यता देता है लेकिन आधुनिक दुनिया नहीं, जैसे गुलामी इस्लामी कानून में वैध है। लेकिन बाहरी दुनिया और कानून इसे अवैध मानते हैं। वाशिंगटन के जार्ज टाउन विश्वविद्यालय में इस्लामी इतिहास के प्राध्यापक जान वुल का मत था कि आज की मुस्लिम दुनिया में शरीयत का मतलब विभिन्न क्षेत्रों में सत्ता स्थापित करने से है, कठोर दंड दिए जाने की व्यवस्था से नहीं। यदि ऐसा होता तो पुरुषों के मामले में चोरी, बलात्कार, हत्या जैसे जघन्य अपराधों में शरियत का उतना उपयोग क्यों नहीं किया जाता? शरियत के कानून के अनुसार कोई मुसलमान अपना धर्म नहीं बदल सकता और कोई गैर मुसलमान मुस्लिम हो जाने के पश्चात् पुनः अपने धर्म में नहीं लौट सकता। क्या यह भी किसी के धार्मिक चिंतन और उसकी किसी आलौकिक शक्ति के प्रति लगाव या मानसिक शांति जैसी सोच पर गुलामी जैसा तो नहीं? अधिकांश मुस्लिम देशों में शरियत निकाह, तलाक, विरासत और बच्चों की देखभाल जैसे निजी मामलों तक ही मर्यादित हो गई है। सबसे अधिक बहस महिलाओं के अधिकारों पर होती है जिन्हें शरियत के नाम पर अत्यन्त संकीर्ण दायरे में मर्यादित कर दिया गया है। महिलाओं को यदि समान अधिकार नहीं दिया जाता है तो आधुनिक दुनिया में आधी जनसंख्या के साथ अन्याय होगा। क्या कोई आधुनिक समाज का देश यह पसंद करेगा?

जहाँ तीन तलाक पर सुप्रीम कोर्ट, केंद्र और मुस्लिम मौलाना आमने-सामने हैं तो वहीं मुस्लिम समाज में भी इस मुद्दे पर मुस्लिम मौलाना, इस्लाम का नव वैचारिक वर्ग, और तलाक से मुक्ति चाहने वाली मुस्लिम महिलाएं भी मैदान में डटी खड़ी हैं। मुस्लिम महिलाएं तो यहाँ तक मुखर हैं कि राष्ट्रीय महिला आयोग की एक सदस्या किसी धार्मिक नेता और मौलवी से सलाह ले रही हैं। हम भारतीय संविधान के युग में रह रहे हैं, न कि औरंगजेब के काल में। जमीअत उलेमा हिंद के अध्यक्ष ने इस मामले में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि तीन तलाक और विवाह के संबंध में सुप्रीम कोर्ट में केंद्र सरकार द्वारा प्रदान की गई राय अस्वीकार्य है और जमीअत उलमा हिंद इसकी न केवल सख्त निंदा करता है बल्कि इसका पुरजोर विरोध भी करेगा। जमीअत उलेमा हिन्द के अध्यक्ष ने कहा है कि मुसलमानों के लिए कुरान और हदीस ही सबसे बड़ा संविधान है और धार्मिक मामलों में व्यवस्था ही प्रासंगिक है जिसमें कयामत तक कोई संशोधन संभव नहीं और सामाजिक सुधारों के नाम पर व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता। उल्लेखनीय है कि मोदी सरकार की ओर से सुप्रीम कोर्ट में पेश इस हलफनामे में कहा गया है कि ''पर्सनल ला के आधार पर मुस्लिम महिलाओं के संवैधानिक अधिकार नहीं छीने जा सकते और इस धर्मनिरपेक्ष देश में तीन तलाक के लिए कोई जगह नहीं है।''

> ***.....देखा जाये तो 2011 की जनगणना के आंकड़ों के मुताबिक देश में कुल 3.72 लाख भिखारी हैं। जिसमें से 25 प्रतिशत भिखारी मुस्लिम हैं। जबकि 72.2 प्रतिशत भिखारी हिन्दू हैं। आंकड़ों के मुताबिक देश के कुल भिखारियों में महिलाएं कम हैं जबकि मुस्लिम भिखारियों में महिलाओं की संख्या ज्यादा है। जिसका सबसे बड़ा कारण मुस्लिम समुदाय के अन्दर जारी मौखिक रूप से तीन तलाक माना गया है। लेखिका जाकिया सोमन का कहना है कि वर्ष 2014 में शरई अदालतों में जो 235 मामले आए उनमें से 80 फीसदी मौखिक तीन तलाक के थे। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि मौखिक तीन तलाक का प्रभाव न केवल प्रभावित महिलाओं पर ही पड़ता है बल्कि परिवार के बच्चे भी बुरी तरह प्रभावित होते हैं। कई बार तो मुस्लिम महिलाओं को उम्र के उस दौर में अलग फेंक दिया जाता है जहाँ उसे रिश्तों के सहारे की सबसे ज्यादा जरूरत होती है।.....***

देखा जाये तो 2011 की जनगणना के आंकड़ों के मुताबिक देश में कुल 3.72 लाख भिखारी हैं। जिसमें से 25 प्रतिशत भिखारी मुस्लिम हैं। जबकि 72.2 प्रतिशत भिखारी हिन्दू हैं। आंकड़ों के मुताबिक देश के कुल भिखारियों में महिलाएं कम हैं जबकि मुस्लिम भिखारियों में महिलाओं की संख्या ज्यादा है। जिसका सबसे बड़ा कारण मुस्लिम समुदाय के अन्दर जारी मौखिक रूप से तीन तलाक माना गया है। लेखिका जाकिया सोमन का कहना है कि वर्ष 2014 में शरई अदालतों में जो 235 मामले आए उनमें से 80 फीसदी मौखिक तीन तलाक के थे। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि मौखिक तीन तलाक का प्रभाव न केवल प्रभावित महिलाओं पर ही पड़ता है बल्कि परिवार के बच्चे भी बुरी तरह प्रभावित होते हैं। कई बार तो मुस्लिम महिलाओं को उम्र के उस दौर में अलग फेंक दिया जाता है जहाँ उसे रिश्तों के सहारे की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। यह भी देखा गया है कि राजनीति और धर्मगुरुओं के गठजोड़ के चलते मुस्लिम महिलाओं के न्याय की बात उठाना मुश्किल रहा है। भारत देश में इसी गठजोड़ के कारण अब तक मुस्लिम महिलाएं तीन तलाक, हलाला, बहुपत्नीत्व, कम उम्र में शादी जैसी कठिन समस्याओं को झेल रही हैं, जबकि यह सभी कुप्रथाएं कुरान की रोशनी में सही नहीं हैं। कुरान में तीन तलाक का जिक्र नहीं है। फिर भी हमारे समाज में तीन तलाक का चलन है। समाज में हलाला जैसी बर्बरतापूर्ण और अमानवीय प्रथा का चलन चलता है और हमारे काजी और धर्मगुरु चुप रहते हैं।

कोई भी संस्कृति और कुप्रथा हमेशा समाज को प्रभावित करती है, समाज की पीढियां हमेशा से कुप्रथाओं के मकड़जाल में फंसी चली आ रही हैं। जो कुप्रथा जितनी पुरानी है उसे हम उतना ही मूल्यवान समझ लेते हैं और उसकी प्राचीनता के प्रति श्रद्धा भाव जगाकर उसे बचाने की दुहाई देने लगते हैं। जबकि मैं समझता हूँ हमें हर 50 या 100 साल बाद अपनी परम्पराओं का विश्लेषण कर उसमें समयानुकूल परिवर्तन कर लेना चाहिए। जन माध्यमों या जन विचारधारा में मुस्लिम महिलाओं का जिक्र एक विशेष छवि के रूप में ही आता है दुर्भाग्य से यह एक ऐसी महिला की छवि दिखलाता है, जिसकी कोई आवाज नहीं है, अपनी कोई पहचान नहीं है। जाहिर है, इसके चलते इन महिलाओं के मसलों एवं अधिकारों के बारे में बात करने का तो सवाल ही नहीं उठता। फिर एक तरफ सरकार की ओर से अवहेलना या बेरूखी और दूसरी तरफ समाज के अंदर नाइंसाफी और दमन। यानी 1400 साल पहले दिए गए कुरानी हक तो नहीं मिले और दूसरी तरफ आजादी के 70 साल बाद लोकतंत्र में भी कोई विशेष सहभागिता नहीं मिली। मुस्लिम महिलाओं की खराब स्थिति के लिए सरकार और मजहबी रहनुमा दोनों ही बराबरी के जिम्मेदार हैं। यह कोई अनजाना खुलासा नहीं रह गया है। खुद मुस्लिम समाज के प्रगतिशील तबकों से यह बात अनछिपी नहीं रह गई है।

आज मुस्लिम समाज में बहुत सारे नव विचारक उठ खड़े हुए हैं। जिनमें वह अपने अधिकार, अपनी कुप्रथाओं पर प्रश्नचिंह और अपनी सामाजिक सहभागिता मांग रहे हैं किन्तु कमाल देखिये वह अपने ये अधिकार किसी सरकार या सेना से नहीं बल्कि अपने धर्म गुरुओं से मांग रहे हैं दरअसल, इस्लामिक उदारपंथ का चोला ओढ़ने वाले कई लोगों की तरह, मौलाना और मुफ्ती, काजी कुरान के दृष्टिकोण को लेकर ज्यादा फिक्रमंद रहते हैं न कि प्रभावित मुस्लिम महिलाओं की सोच को लेकर। उनके सामाजिक जीवन को लेकर ऐसे लोग भारतीय संविधान का भी ख्याल नहीं करते जो आर्टिकल-14 के तहत नागरिकों के साथ बराबरी के मौलिक अधिकार और आर्टिकल-15 के तहत भेदभाव के खिलाफ मौलिक अधिकार की बात करते हैं। इस संदर्भ में मुस्लिम विचारक फरहा फैज प्रासंगिक हो जाती हैं। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट से अपील की है कि सुप्रीम कोर्ट भारतीय मुस्लिमों को मुस्लिम रूढ़िवादियों से बचाने के लिए (आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल बोर्ड) और भारतीय मुस्लिम महिला आंदोलन (भारतीय मुस्लिम महिला आन्दोलन) जैसे संगठनों पर बैन लगाएं क्योंकि इन रूढ़िवादियों की सोच, इनकी विचारधारा जमात-उद-दावा के हाफिज मोहम्मद सईद जैसे लोगों से मेल खाती है। बेखोफ हिम्मत के साथ फैज मदरसा में दी जाने वाली शिक्षा में बदलाव की बात करती हैं और ये भी कहती हैं कि (भारतीय मुस्लिम महिला आन्दोलन) दरअसल (आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल बोर्ड) की कठपुतली है। दोनों संगठन शरिया के हिमायती हैं। इस व्यवस्था को ऐसे ही चलते रहने की इजाजत नहीं मिलनी चाहिए। भारत में केवल एक संविधान होना चाहिए और जज भी जो उसी संविधान के अनुसार काम करें। यानी भारत की न्यायिक व्यवस्था के बराबर चलने वाली एक और व्यवस्था धर्म के नाम पर तो बिलकुल बंद होनी चाहिए! ताकि समाज के हर एक तबके की महिला निडर होकर अपनी पीड़ा बयान कर सके।

- राजीव चौधरी

बोध कथा

मुझसे बुरा न कोय

मैं कथा कह रहा था करोल बाग के आर्य समाज में। एक सज्जन रात के समय मुझे दूध पिलाने के लिए अपने घर ले गये। घर में जाकर बैठे ही थे कि बिजली फेल हो गई। अन्धकार हो गया। अब वे सज्जन लगे सरकार को कोसने-''कैसी सरकार है यह! जब से इनका राज्य हुआ, तब से कोई कार्य ठीक प्रकार से नहीं होता। अब देखो, बिजली ही चली गई!''

मैंने कहा-''राज्य को कोसने से कुछ बनेगा नहीं। आपके घर में कोई मोमबत्ती आदि होगी, उसे जला लीजिए, कार्य चल जायेगा।''

तब उन्होंने पुकारा-''ओ कुक्कू की माँ! दियासलाई तो ला। देख, मोमबत्ती कहाँ है?''

अब कुक्कू की माँ ने दियासलाई ढूँढनी आरम्भ की। अँधेरे में इधर देखा, उधर देखा, कहीं भी उसे दियासलाई नहीं मिली। अन्ततः सिगरेट पीने वाले एक सज्जन से दियासलाई ली गई। मोमबत्ती की खोज आरम्भ की। अँधेरे में इधर देखा, उधर देखा; कहीं भी उसे दियासलाई नहीं मिली। इस अलमारी में, उस अलमारी में, यहाँ-वहाँ। सलाईयाँ एक-एक करके घिसाई जा रही हैं, मोमबत्ती की खोज हो रही है, परन्तु मोमबत्ती है कि मिलने का नाम ही नहीं लेती। दियासलाई वाले ने कहा-''तीलियाँ तनिक देखकर खर्च कीजिये, ऐसा न हो कि मोमबत्ती मिले तो डिबिया में तीलियाँ समाप्त हो जायँ।'' इस भाग-दौड़ में बिजनी फिर आ गई। प्रकाश हो गया। वे सज्जन बैठे, फिर बोले-''राज्य का प्रबन्ध ही सारा खराब है। जिस विभाग को देखो, उसी में त्रुटि है। कितना समय इन लोगों ने नष्ट कर दिया!''

मैंने यह आलोचना सुनी तो हँसते हुए कहा-''राज्य का प्रबन्ध तो अच्छा है या बुरा, परन्तु तुम अपने घर का प्रबन्ध तो देखो! न दियासलाई रखने का ठिकाना, न मोमबत्ती रखने का स्थान और कोसा जाता है राज्य को! राज्य क्या तुम्हारे घर का भी प्रबन्ध करेगा?''

यह है हमारा स्वभाव! देखनी चाहिये अपनी त्रुटि। हम दूसरों की त्रुटियों को ही देखते रहते हैं!-

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दीखा कोय।
मन जो अपना देखिया, मुझसे बुरा न होय।।

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दलित समाज और ईसाई मिशनरी

- डॉ. विवेक आर्य

> ...... *वीर हनुमान और जामवंत को बन्दर और भालू कहकर उनका उपहास किया गया जबकि वे दोनों महान विद्वान, रणनीतिकार और मनुष्य थे। इन तथ्यों की अनदेखी की गई। रावण को अपनी बहन शूर्पनखा के लिए प्राण देने वाला भाई कहकर महिमामंडित किया गया श्री राम और उनके भाइयों को राजगद्दी से बढ़कर परस्पर प्रेम को वरीयता देने की अनदेखी की गई। श्री कृष्ण जी के महान चरित्र के साथ भी इसी प्रकार से बेईमानी की गई। उन्हें भी चरित्रहीन, कामुक आदि कहकर उपहास का पात्र बनाया गया। इस प्रकार से नकारात्मक खेल खेलकर भारतीय विशेष रूप से दलितों के मन से श्री राम की छवि को बिगाड़ा गया।* ......

पिछले कुछ दिनों से समाचार पत्रों के माध्यम से भारत में दलित राजनीति की दिशा और दशा पर बहुत कुछ पढ़ने को मिला। रोहित वेमुला, गुजरात में ऊना की घटना, महिषासुर शहादत दिवस आदि घटनाओं को पढ़कर यह समझने का प्रयास किया कि इस खेल में कठपुतली के समान कौन नाच रहा है, कौन नचा रहा है, किसको लाभ मिल रहा है और किस की हानि हो रही हैं। विश्लेषण करने के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि भारत के दलित कठपुतली के समान नाच रहे हैं, विदेशी ताकतें विशेष रूप से ईसाई विचारक, अपने अरबों डॉलर के धन-सम्पदा, हजारों कार्यकर्ता, राजनीतिक शक्ति, अंतराष्ट्रीय स्तर की ताकत, दूर दृष्टि, NGO के बड़े तंत्र, विश्वविद्यालयों में बैठे शिक्षाविदों आदि के दम पर दलितों को नचा रहे हैं और इसका तात्कालिक लाभ भारत के कुछ राजनेताओं को मिल रहा है और इससे हानि हर उस देशवासी की हो रही है जिसने भारत देश की पवित्र मिट्टी में जन्म लिया है।

हम अपना विश्लेषण 1947 से आरम्भ करते हैं। अंग्रेजों द्वारा भारत छोड़ने पर अंग्रेज पादरियों ने अपना बिस्तर-बोरी समेटना आरम्भ ही कर दिया था क्योंकि उनका अनुमान था कि भारत अब एक हिन्दू देश घोषित होने वाला है। तभी भारत सरकार द्वारा घोषणा हुई कि भारत अब एक सेक्युलर देश कहलायेगा। मुरझायें हुए पादरियों के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। क्योंकि सेक्युलर राज में उन्हें कोई रोकने वाला नहीं था। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् संसार में शक्ति का केंद्र यूरोप से हटकर अमेरिका में स्थापित हो गया। ऐसे में ईसाईयों ने भी अपने केंद्र अमेरिका में स्थापित कर लिए। उन्हीं केंद्रों में बैठकर यह विचार किया गया कि भारत में ईसाइयत का कार्य कैसे किया जाये। भारत में बसने वाले ईसाईयों में 90% ईसाई दलित समाज से धर्म परिवर्तन कर ईसाई बने थे। इसलिए भारत के दलित को ईसाई बनाने के लिए रणनीति बनाई गई। यह कार्य अनेक चरणों में आरम्भ किया गया।

1. शोध के माध्यम से शैक्षिक प्रदूषण

ईसाई पादरियों ने सोचा कि सबसे पहले दलितों के मन से उनके इष्ट देवता विशेष रूप से श्री राम और रामायण को दूर किया जाये। क्योंकि जब तक राम भारतियों के दिलों में जीवित रहेंगे तब तक ईसा मसीह अपना घर नहीं बना पाएंगे। इसके लिए उन्होंने सुनियोजित तरीके से शैक्षिक प्रदूषण का सहारा लिया। विदेश में अनेक विश्वविद्यालयों में शोध के नाम पर श्री राम और रामायण को दलित और नारी विरोधी सिद्ध करने का शोध आरम्भ किया गया। विदेशी विश्वविद्यालयों में उन भारतीय छात्रों को प्रवेश दिया गया जो इस कार्य में उनका साथ दे। रोमिला थापर, इरफान हबीब, कांचा इलैयह आदि इसी रणनीति के पात्र हैं। कुछ उदाहरण देकर हम सिद्ध करेंगे कि कैसे श्री राम जी को दलित विरोधी, नारी विरोधी, अत्याचारी आदि सिद्ध किया गया। शम्बूक वध की काल्पनिक और मिलावटी घटना को उछाला गया और श्री राम जी के शबरी भीलनी और निषाद राजा केवट से सम्बन्ध को अनदेखी जानकर की गई। श्री राम को नारी विरोधी सिद्ध करने के लिए सीता की अग्निपरीक्षा और अहिल्या उद्धार जैसे काल्पनिक प्रसंगों को उछाला गया जबकि दासी मंथरा और महारानी कैकयी के साथ वनवास के पश्चात लौटने पर किये गए सदव्यवहार और प्रेम की अनदेखी की गई। वीर हनुमान और जामवंत को बन्दर और भालू कहकर उनका उपहास किया गया जबकि वे दोनों महान विद्वान, रणनीतिकार और मनुष्य थे। इन तथ्यों की अनदेखी की गई। रावण को अपनी बहन शूर्पनखा के लिए प्राण देने वाला भाई कहकर महिमामंडित किया गया श्री राम और उनके भाइयों को राजगद्दी से बढ़कर परस्पर प्रेम को वरीयता देने की अनदेखी की गई। श्री कृष्ण जी के महान चरित्र के साथ भी इसी प्रकार से बेईमानी की गई। उन्हें भी चरित्रहीन, कामुक आदि कहकर उपहास का पात्र बनाया गया। इस प्रकार से नकारात्मक खेल खेलकर भारतीय विशेष रूप से दलितों के मन से श्री राम की छवि को बिगाड़ा गया।

2. वेदों के सम्बन्ध में भ्रामक प्रचार

इस चरण का आरम्भ तो बहुत पहले यूरोप में ही हो गया था। इस चरण में वेदों के प्रति भारतीयों के मन में बसी आस्था और विश्वास को भ्रान्ति में बदलकर उसके स्थान पर बाइबिल को बसाना था। इस चरण में मुख्य लक्ष्य दलितों को रखकर निर्धारित किया गया। ईसाई मिशनरी भली प्रकार से जानते है कि गोरक्षा एक ऐसा विषय है जिससे हर भारतीय एकमत है। इस एक विषय को सम्पूर्ण भारत ने एक सूत्र में उग्र रूप से पिरोया हुआ है। इसलिए गोरक्षा को विशेष रूप से लक्ष्य बनाया गया। हर भारतीय गोरक्षा के लिए अपने आपको बलिदान तक करने के तैयार रहता है। उसकी इसी भावना को मिटाने के लिए वेद मन्त्रों के भ्रामक अर्थ किये गए। वेदों में मनुष्य से लेकर हर प्राणिमात्र को मित्र के रूप में देखने का सन्देश मिलता है। इस महान सन्देश के विपरीत वेदों में पशुबलि, मांसाहार आदि जबरदस्ती शोध के नाम पर प्रचारित किये गए। इस प्रचार का नतीजा यह हुआ कि अनेक भारतीय आज गौ के प्रति ऐसी भावना नहीं रखते जैसी पहले उनके पूर्वज रखते थे। दलितों के मन में भी यह जहर घोला गया। पुरुष सूक्त को लेकर भी इसी प्रकार से वेदों को जातिवादी घोषित किया गया। जिससे दलितों को यह प्रतीत हो कि वेदों में शूद्र को नीचा दिखाया गया है। इसी वेदों के प्रति अनास्था को बढ़ाने के लिए वेदों के उलटे सीधे अर्थ निकाले गए। जिससे वेद धर्मग्रंथ न होकर जादू-टोने की पुस्तक, अन्धविश्वास को बढ़ावा देने वाली पुस्तक लगे। यह सब योजनाबद्ध रूप में किया गया। इसी सम्बन्ध में वेदों में आर्य-द्रविड़ युद्ध की कल्पना की गई जिससे यह सिद्ध हो कि आर्य लोग विदेशी थे।

3. बुद्ध मत को बढ़ावा

वेदों के विषय में भ्रान्ति फैलाने के पश्चात ईसाईयों ने सोचा कि दलित समाज से वेदों को छीनकर उनके हाथों में बाइबिल पकड़ाना इतना सरल नहीं है। उनकी इस मान्यता का आधार उनके पिछले 400 वर्षो के इस देश में अनुभव था। इसलिए उन्होंने इतिहास के पुराने पाठ को स्मरण किया। 1200 वर्षों में इस्लामिक आक्रान्तों के समक्ष धर्म परिवर्तन हिन्दू समाज में उतना नहीं हुआ जितना बौद्ध मतावली में हुआ। अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश इंडोनेशिया, जावा, सुमात्रा तक फैला बुद्ध मत तेजी से लोप होकर इस्लाम में परिवर्तित हो गया। जबकि इस्लाम की चोट से बुद्ध मत भारत भूमि से भी लोप हुआ, मगर हिन्दू धर्म बलिदान देकर, अपमान सहकर किसी प्रकार से अपने आपको सुरक्षित रखा। ईसाई मिशनरी ने इस इतिहास से यह निष्कर्ष निकाला कि दलितों को पहले बुद्ध बनाया जाये और फिर ईसाई बनाना उनके लिए सरल होगा। इसी कड़ी में डॉ. अम्बेडकर द्वारा बुद्ध धर्म ग्रहण करना ईसाईयों के लिए वरदान सिद्ध हुआ। डॉ. अम्बेडकर के नाम के प्रभाव से दलितों को बुद्ध बनाने का कार्य आज ईसाई करते हैं। इस कार्य को सरल बनाने के लिए विदेशी विश्वविद्यालयों में महात्मा बुद्ध और बुद्ध मत पर अनेक पीठ स्थापित किये गए। यह दिखाने का प्रयास किया गया कि भारत का गौरवशाली इतिहास महात्मा बुद्ध से आरम्भ होता है। उससे पहले भारतीय जंगली, असभ्य और बर्बर थे। पतंजलि योग के स्थान पर बुद्धिस्ट ध्यान अर्थात विपश्यना को प्रचलित किया गया। कुल मिलाकर ईसाई मिशनरियों का यह प्रयास दलितों को महात्मा बुद्ध के खूंटे से बांधने का था।

4 . सम्राट अशोक को बढ़ावा

इस चरण में ईसाई मिशनरियों द्वारा श्री राम चंद्र के स्थान पर सम्राट अशोक को बढ़ावा दिया गया। राजा अशोक को मौर्य वंश का सिद्ध कर दलितों का राजा प्रदर्शित किया गया और राजा राम को आर्यो का राजा प्रदर्शित किया गया। इस प्रयास का उद्देश्य श्री राम आर्यो के विदेशी राजा थे और अशोक मूलनिवासियों के राजा था। ऐसा भ्रामक प्रचार किया गया। इस प्रकार का मुख्य लक्ष्य श्री राम से दलितों को दूर कर सम्राट अशोक के खूंटे से जोड़ना था। इस कार्य के लिए अशोक द्वारा कलिंग युद्ध के पश्चात् बुद्ध मत स्वीकार करने को इतिहास में बड़ी घटना के रूप में दिखाना था। अशोक को महान समाज सुधारक, जनता का सेवक, कल्याणकारी प्रदर्शित किया गया। कुएं बनवाना, अतिथिशाला बनवाना, सड़कें बनवाना, रुग्णालय बनवाना जैसी बातों को अशोक राज में महान कार्य बताया गया। जबकि इससे बहुत काल पहले राम राज्य के सदियों पुराने न्यायप्रिय एवं चिरकाल से स्मरण किये जा रहे उच्च शासन की कसौटी को भुलाने का प्रयास किया गया। यह बहुत बड़ा छल था। जबकि अशोक राज के इस तथ्य को छुपाया गया कि अशोक ने राज सेना को भंग करके सभी सैनिकों को बौद्ध भिक्षुक बना दिया गया और राजकोष को बौद्ध विहार बनाने के लिए खाली कर दिया था। अशोक की इस सनक से तंग आकर मंत्रिमंडल ने अशोक को राजगद्दी से हटा दिया था और अशोक के पौत्र को राजा बना दिया था। अशोक के छद्म अहिंसावाद के कारण संसार का सबसे शक्तिशाली राज्य मगध कालांतर में कलिंग के राजा खारवेला से हार गया था। यह था क्षत्रियों के हथियार छीनकर उन्हें बुद्ध बनाने का नतीजा। इस प्रकार से ईसाईयों ने श्री राम की महिमा को दबाने के लिए अशोक को खड़ा किया।

5. आर्यो को विदेशी बनाना

यह चरण सफेद झूठ पर आधारित था। पहले आर्यो को विदेशी और स्थानीय मूलनिवासियों को स्वदेशी प्रचारित किया गया। फिर यह कहा गया कि विदेशी आर्यों ने मूलनिवासियों को युद्ध में परास्त कर उन्हें उत्तर से दक्षिण भारत में भगा दिया। उनकी कन्याओं के साथ जबरदस्ती विवाह किया। इससे उत्तर भारतीयों और दक्षिण भारतीयों में दरार डालने का प्रयास किया गया। इसके अतिरिक्त नाक के आधार पर और रंग के आधार पर भी तोड़ने का प्रयास किया। इससे दाल नहीं गली तो हिन्दू समाज से अलग प्रदर्शित करने के लिए सवर्णो को आर्य और शूद्रों को अनार्य सिद्ध करने का प्रयास किया गया। सत्य यह है कि इतिहास में एक भी प्रमाण आर्यो के विदेशी होने और हमलावर होने का नहीं मिलता। ईसाईयों की इस हरकत से भारत के राजनेताओं ने बहुत लाभ उठाया। फूट डालों और राज करो की यह नीति बेहद खतरनाक है।

6. ब्राह्मणवाद और मनुवाद का जुमला

यह चरण बेहद आक्रोश भरा था। दलितों को यह दिखाया गया कि सभी सवर्ण जातिवादी है और दलितों पर हजारों वर्षो से अत्याचार करते आये है। जातिवाद को सबसे अधिक ब्राह्मणों ने बढ़ावा दिया है। जातिवाद की इस विष लता को खाद देने के लिए ब्राह्मणवाद का जुमला प्रचलित किया गया। हमारे देश के इतिहास में मध्य काल का एक अंधकारमय युग भी था। जब वर्णव्यवस्था का स्थान जातिवाद ने ले लिया था। कोई व्यक्ति ब्राह्मण गुण,कर्म और स्वाभाव के स्थान पर नहीं अपितु जन्म के स्थान पर प्रचलित किया गया। इससे पूर्व वैदिक काल में किसी भी व्यक्ति का वर्ण, उसकी शिक्षा प्राप्ति के उपरांत उसके गुणों के आधार पर निर्धारित होता था। इस बिगाड़ व्यवस्था में एक ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण कहलाने लगा चाहे वह अनपढ़, मूर्ख, चरित्रहीन क्यों न हो और एक शूद्र का बेटा केवल इसलिए शूद्र कहलाने लगा क्योंकि उसका पिता शूद्र था। वह चाहे कितना भी गुणवान क्यों न हो। इसी काल में सृष्टि के आदि में प्रथम संविधानकर्ता मनु द्वारा निर्धारित मनुस्मृति में जातिवादी लोगों द्वारा जातिवाद के समर्थन में मिलावट कर दी गई। इस मिलावट का मुख्य उद्देश्य मनुस्मृति से जातिवाद को स्वीकृत करवाना था। इससे न केवल समाज में विध्वंश का दौर प्रारम्भ हो गया अपितु सामाजिक एकता भी भंग हो गई। स्वामी दयानंद द्वारा आधुनिक इतिहास में इस घोटाले को उजागर किया गया। ईसाई मिशनरी की तो जैसे मन की मुराद पूरी हो गई। दलितों को भड़काने के लिए उन्हें मसाला मिल गया। मनुवाद जैसी जुमले प्रचलित किये गए। मनु महर्षि को उस मिलावट के लिए गालियां दी गई जो उनकी रचना नहीं थी। इस वैचारिक प्रदूषण का उद्देश्य हर प्राचीन गौरवशाली इतिहास और उससे सम्बंधित

- शेष पृष्ठ 5 पर

पृष्ठ 4 का शेष

तथ्यों के प्रति जहर भरना था। इस नकारात्मक प्रचार के प्रभाव से दलित समाज न केवल हिन्दू समाज से चिढ़ने लगा अपितु उनका बड़े पैमाने पर ईसाई धर्मान्तरण करने में सफल भी रहे। हालांकि जिस बराबरी के हक के लिए दलितों ने ईसाईयों का पल्लू थामा था। वह हक उन्हें वहां भी नहीं मिला। यहाँ वे हिन्दू दलित कहलाते थे, वहां वे ईसाई दलित कहलाते हैं। अपने पूर्वजों का उच्च धर्म खोकर भी वे निम्न स्तर जीने को आज भी बाधित हैं और अंदर ही अंदर अपनी गलती पर पछताते हैं।

7. इतिहास के साथ खिलवाड़

इस चरण में बुद्ध मत का नाम लेकर ईसाई मिशनरियों द्वारा दलितों को बरगलाया गया। भारतीय इतिहास में बुद्ध मत के अस्त काल में तीन व्यक्तियों का नाम बेहद प्रसिद्द रहा है। आदि शंकराचार्य, कुमारिल भट्ट और पुष्यमित्र शुंग। इन तीनों का कार्य उस काल में देश, धर्म और जाति की परिस्थिति के अनुसार महान तप वाला था। जहाँ एक ओर आदि शंकराचार्य ने पाखंड,अन्धविश्वास, तंत्र-मंत्र, व्यभिचार की दीमक से जर्जर हुए बुद्ध मत को प्राचीन शास्त्रार्थ शैली में परास्त कर वैदिक धर्म की स्थापना की गई वही दूसरी ओर कुमारिल भट्ट द्वारा माध्यम काल के घनघोर अँधेरे में वैदिक धर्म के पुनरुद्धार का संकल्प लिया गया। यह कार्य एक समाज सुधार के समान था। बुद्ध मत सदाचार, संयम, तप और संघ के सन्देश को छोड़कर मांसाहार, व्यभिचार, अन्धविश्वास का प्राय: बन चुका था। ये दोनों प्रयास शास्त्रीय थे तो तीसरा प्रयास राजनीतिक था। पुष्यमित्र शुंग मगध राज्य का सेनापति था। वह महान राष्ट्रभक्त और दूरदृष्टि वाला सेनानी था। उस काल में सम्राट अशोक का नालायक वंशज बृहदरथ राजगद्दी पर बैठा था। पुष्यमित्र ने उसे अनेक बार आगाह किया था कि देश की सीमा पर बसे बुद्ध विहारों में विदेशी ग्रीक सैनिक बुद्ध भिक्षु बनकर जासूसी कर देश को तोड़ने की योजना बना रहे हैं। उस पर तुरंत कार्यवाही करें। मगर ऐशो आराम में मस्त बृहदरथ ने पुष्यमित्र की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। विवश होकर पुष्यमित्र ने सेना के निरीक्षण के समय बृहदरथ को मौत के घाट उतार दिया। इसके पश्चात् पुष्यमित्र ने बुद्ध विहारों में छिपे उग्रवादियों को पकड़ने के लिए हमला बोल दिया। ईसाई मिशनरी पुष्यमित्र को एक खलनायक, एक हत्यारे के रूप में चित्रित करते हैं। जबकि वह महान देशभक्त था। अगर पुष्यमित्र बुद्धों से द्वेष करता तो उस काल का सबसे बड़ा बुद्ध स्तूप न बनवाता। ईसाई मिशनरियों द्वारा आदि शंकराचार्य, कुमारिल भट्ट और पुष्यमित्र को निशाना बनाने के कारण उनकी ब्राह्मणों के विरोध में दलितों को भड़काने की नीति थी। ईसाई मिशनरियों ने तीनों को ऐसा दर्शाया जैसे वे तीनों ब्राह्मण थे और बुद्धों के विरोधी थे। इसलिए दलितों को बुद्ध होने के नाते तीनों ब्राह्मणों का बहिष्कार करना चाहिए। इस प्रकार से इतिहास के साथ खेलते हुए सत्य तथ्यों को छुपाकर ईसाईयों ने कैसा पीछे से घात किया। पाठक स्वयं निर्णय कर सकते हैं।

8. हिन्दू त्योहारों और देवी-देवताओं के नाम पर भ्रामक प्रचार

ईसाई मिशनरी ने हिन्दू समाज से सम्बंधित त्योहारों को भी नकारात्मक प्रकार से प्रचारित करने का एक नया प्रपंच किया। इस खेल के पीछे का इतिहास भी जानिए। जो दलित ईसाई बन जाते थे। वे अपने रीति-रिवाज, अपने त्योहार बनाना नहीं छोड़ते थे। उनके मन में प्राचीन धर्म के विषय में आस्था और श्रद्धा धर्म परिवर्तन करने के बाद भी जीवित रहती थी। अब उनको कट्टर बनाने के लिए उनको भड़काना आवश्यक था। इसलिए ईसाई मिशनरियों ने विश्वविद्यालयों में हिन्दू त्योहारों और उनसे सम्बंधित देवी-देवतों के विषय में अनर्गल प्रलाप आरम्भ किया। इस षड्यंत्र का एक उदहारण लीजिये। महिषुर दिवस का आयोजन दलितों के माध्यम से कुछ विश्वविद्यालयों में ईसाईयों ने आरम्भ करवाया। इसमें शोध के नाम पर यह प्रसिद्द किया गया कि काली देवी द्वारा अपने से अधिक शक्तिशाली मूलनिवासी राजा के साथ नौ दिन तक पहले शयन किया गया। अंतिम दिन मदिरा के नशे में देवी ने शूद्र राजा महिषासुर का सर काट दिया। ऐसी बेहूदी, बचकाना बातों को शौध का नाम देने वाले ईसाईयों का उद्देश्य दशहरा, दीवाली, होली, ओणम, श्रावणी आदि पर्वों को पाखंड और ईस्टर, गुड फ्राइडे आदि को पवित्र और पावन सिद्ध करना था। दलित समाज के कुछ युवा भी ईसाईयों के बहकावें में आकर मूर्खता पूर्ण हरकते कर अपने आपको उनका मानसिक गुलाम सिद्ध कर देते है। पाठक अभी तक यह समझ गए होंगे कि ईसाई मिशनरी कैसे भेड़ की खाल में भेड़िया जैसा बर्ताव करती है।

9. हिंदुत्व से अलग करने का प्रयास

ईसाई समाज की तेज खोपड़ी ने एक बड़ा सुनियोजित धीमा जहर खोला। उन्होंने इतिहास में जितने भी कार्य हिन्दू समाज द्वारा जातिवाद को मिटाने के लिए किये गए । उन सभी को छिपा दिया। जैसे भक्ति आंदोलन के सभी संत कबीर, गुरु नानक, नामदेव, दादूदयाल, बसवा लिंगायत, रविदास आदि ने उस काल में प्रचलित धार्मिक अधविश्वासों पर निष्पक्ष होकर अपने विचार कहे थे। समग्र रूप से पढ़ें तो हर समाज सुधारक का उद्देश्य समाज सुधार करना था। जहाँ कबीर हिन्दू पंडितों के पाखंडों पर जमकर प्रहार करते है वहीं मुसलमानों के रोजे, नमाज और कुरबानी पर भी भारी भरकम प्रतिक्रिया करते हैं। गुरु नानक जहाँ हिन्दू में प्रचलित अंधविश्वासों की समीक्षा करते हैं वहीं इस्लामिक आक्रांता बाबर को साक्षात शैतान की उपमा देते है। इतना ही नहीं सभी समाज सुधारक वेद, हिन्दू देवी-देवता, तीर्थ, ईश्वर आराधना, आस्तिकता, गोरक्षा सभी में अपना विश्वास और समर्थन प्रदर्शित करते हैं। ईसाई मिशनरियों ने भक्ति आंदोलन पर शोध के नाम पर सुनियोजित षड्यंत्र किया। एक ओर उन्होंने समाज सुधारकों द्वारा हिन्दू समाज में प्रचलित अंधविश्वासों को तो बढ़ा-चढ़ा कर प्रचारित किया वहीं दूसरी ओर इस्लाम आदि पर उनके द्वारा कहे गए विचारों को छिपा दिया। इससे दलितों को यह दिखाया गया कि जैसे भक्ति काल में संत समाज ब्राह्मणों का विरोध करता था और दलितों के हित की बात करता था वैसे ही आज ईसाई मिशनरी भी ब्राह्मणों के पाखंड का विरोध करती है और दलितों के हक की बात करती है। कुल मिलकर यह सारी कवायद छवि निर्माण की है। स्वयं को अच्छा एवं अन्य को बुरा दिखाने के पीछे ईसा मसीह के लिए भेड़ों को एकत्र करना एकमात्र उद्देश्य है। ईसाई मिशनरी के इन प्रयासों में भक्ति काल में संतों के प्रयासों में एक बहुत महत्वपूर्ण अंतर है। भक्ति काल के सभी हिन्दू समाज के महत्वपूर्ण अंग बनकर समाज में आई हुई बुराइयों को ठीक करने के लिए श्रम करते थे। उनका हिंदुत्व की मुख्य विचारधारा से अलग होने का कोई उद्देश्य नहीं था। जबकि वर्तमान में दलितों के लिए कल्याण की बात करने वाली ईसाई मिशनरी उनके भड़का कर हिन्दू समाज से अलग करने के लिए सारा श्रम कर रही है। उनका उद्देश्य जोड़ना नहीं तोड़ना है। पाठक आसानी से इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते है।

10. सवर्ण हिन्दू समाज द्वारा दलित उत्थान का कार्य

पिछले 100 वर्षों से हिन्दू समाज ने दलितों के उत्थान के लिए अनेक प्रयास किये। सर्वप्रथम प्रयास आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानंद द्वारा किया गया। आधुनिक भारत में दलितों को गायत्री मंत्र की दीक्षा देने वाले, सवर्ण होते हुए उनके हाथ से भोजन-जल ग्रहण करने वाले, उन्हें वेद मंत्र पढ़ने, सुनने और सुनाने का प्रावधान करने वाले, उन्हें बिना भेदभाव के आध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण करने का विधान देने वाले, उन्हें वापस शुद्ध होकर वैदिक धर्मी बनने का विधान देने वाले अगर कोई है तो स्वामी दयानंद हैं। स्वामी दयानंद के चिंतन का अनुसरण करते हुए आर्यसमाज ने अनेक गुरुकुल और विद्यालय खोले जिनमें बिना जाति भेदभाव के समान रूप से सभी को शिक्षा दी गई। अनेक सामूहिक भोज कार्यक्रम हुए जिससे सामाजिक दूरियां दूर हुए। अनेक मंदिरों में दलितों को न केवल प्रवेश मिला अपितु जनेऊ धारण करने और अग्निहोत्र करने का भी अधिकार मिला। इस महान कार्य के लिए आर्यसमाज के अनेकों कार्यकर्ताओं ने जैसे स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द आदि ने अपना जीवन लगा दिया। यह अपने आप में बड़ा इतिहास है।

इसी प्रकार से वीर सावरकर द्वारा रत्नागिरी में पतितपावन मंदिर की स्थापना करने से लेकर दलितों के मंदिरों में प्रवेश और छुआछूत उनमूलन के लिए भारी प्रयास किये गए। इसके अतिरिक्त वनवासी कल्याण आश्रम, रामकृष्ण मिशन आदि द्वारा वनवासी क्षेत्रों में भी अनेक कार्य किये जा रहे हैं। ईसाई मिशनरी अपने मीडिया में प्रभावों से इन सभी कार्यों को कभी उजागर नहीं होने देती। वह यह दिखाती है कि केवल वही कार्य कर रहे हैं। बाकी कोई दलितों के उत्थान का कार्य नहीं कर रहा है। यह भी एक प्रकार का वैचारिक आतंकवाद है। इससे दलित समाज में यह भ्रम फैलता है कि केवल ईसाई ही दलितों के शुभचिंतक हैं। हिन्दू सवर्ण समाज तो स्वार्थी और उनसे द्वेष करने वाला है।

11. मीडिया का प्रयोग

ईसाई मिशनरी ने अपने अथाह साधनों के दम पर सम्पूर्ण विश्व के सभी प्रकार के मीडिया में अपने आपको शक्तिशाली रूप में स्थापित कर लिया है। उन्हें मालूम है कि लोग वह सोचते हैं, जो मीडिया सोचने को प्रेरित करता है। इसलिए किसी भी राष्ट्र में कभी भी आपको ईसाई मिशनरी द्वारा धर्म परिवर्तन के लिए चलाये जा रहे गोरखधंधों पर कभी कोई समाचार नहीं मिलेगा। जबकि भारत जैसे देश में दलितों के साथ हुई कोई साधारण घटना को भी इतना विस्तृत रूप दे दिया जायेगा। मानों सारा हिन्दू समाज दलितों का सबसे बड़ा शत्रु है। हम दो उदहारणों के माध्यम से इस खेल को समझेंगे। पूर्वोत्तर राज्यों में ईसाई चर्च का बोलबाला है। रियांग आदिवासी त्रिपुरा राज्य में पीढ़ियों से रहते आये हैं। वे हिन्दू वैष्णव मान्यता को मानने वाले हैं। ईसाईयों ने भरपूर जोर लगाया परंतु उन्होंने ईसाई बनने से इन्कार कर दिया। चर्च ने अपना असली चेहरा दिखाते हुए रियांग आदिवासियों की बस्तियों पर अपने ईसाई गुंडों से हमला करना आरम्भ कर दिया। वे उनके घर जला देते, उनकी लड़कियों से बलात्कार करते, उनकी फसल बर्बाद कर देते। अंत में कई रियांग ईसाई बन गए, कई त्रिपुरा छोड़कर आसाम में निर्वासित जीवन जीने लग गए। पाठकों ने कभी चर्च के इस अत्याचार के विषय में नहीं सुना होगा। क्योंकि सभी मानवाधिकार संगठन, प्रिंट मीडिया, अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं ईसाईयों के द्वारा प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से संचालित हैं। इसके ठीक उल्ट गुजरात के ऊना में कुछ दलितों को गोहत्या के आरोप में हुई पिटाई को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे उठाया गया जैसे इससे बड़ा अत्याचार तो दलितों के साथ कभी हुआ ही नहीं है। रियांग आदिवासी भी दलित हैं। उनके ऊपर जो अत्याचार हुआ उसका शब्दों में बखान करना असंभव है। मगर गुजरात की घटना का राजनीतिकरण कर उसे उछाला गया। जिससे दलितों के मन में हिन्दू समाज के लिए द्वेष भरे। इस प्रकार से चर्च अपने सभी काले कारनामों पर सदा पर्दा डालता है और अन्यों की छोटी छोटी घटनाओं को सुनियोजित तरीके से मीडिया के द्वारा प्रयोग कर अपना ईसाईकरण का कार्यक्रम चलाता है। इसके लिए विदेशों से चर्च को अरबों रुपया हर वर्ष मिलता है।

12. डॉ. अम्बेडकर और दलित समाज

ईसाई मिशनरी ने अगर किसी के चिंतन का सबसे अधिक दुरुपयोग किया तो वह संभवत डॉ. अम्बेडकर ही थे। जब तक डॉ. अम्बेडकर जीवित थे, ईसाई मिशनरी उन्हें बड़े से बड़ा प्रलोभन देती रही कि किसी प्रकार से ईसाई मत ग्रहण कर ले क्योंकि डॉ. अम्बेडकर के ईसाई बनते ही करोड़ों दलितों के ईसाई बनने का रास्ता सदा के लिए खुल जाता। उनका प्रलोभन तो क्या ही स्वीकार करना था। डा. अम्बेडकर ने खुले शब्दों के ईसाइयों द्वारा साम,दाम, दंड और भेद की नीति से धर्मान्तरण करने को अनुचित कहा। डॉ. अम्बेडकर ने ईसाई धर्मान्तरण को राष्ट्र के लिए घातक बताया था। उन्हें ज्ञात था कि इसे धर्मान्तरण करने के बाद भी दलितों के साथ भेदभाव होगा। उन्हें ज्ञात था कि ईसाई समाज में भी अंग्रेज ईसाई, गैर अंग्रेज ईसाई, सवर्ण ईसाई,दलित ईसाई जैसे भेदभाव हैं। यहाँ तक कि इन सभी गुटों में आपस में विवाह आदि के सम्बन्ध नहीं होते है। यहाँ तक इनके गिरिजाघर, पादरी से लेकर कब्रिस्तान भी अलग होते हैं। अगर स्थानीय स्तर पर (विशेष रूप से दक्षिण भारत) दलित ईसाईयों के साथ दूसरे ईसाई भेदभाव करते हैं तो विश्व स्तर पर गोरे ईसाई (यूरोप) काले ईसाईयों (अफ्रीका) के साथ भेदभाव करते हैं। इसलिए केवल नाम से ईसाई बनने से डॉ. अम्बेडकर ने स्पष्ट इंकार कर दिया। जबकि उनके ऊपर अंग्रेजों का भारी दबाव भी था। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार ईसाई बनते ही हर भारतीय भारतीय नहीं रहता। वह विदेशियों का आर्थिक, मानसिक और धार्मिक रूप से गुलाम बन जाता है। इतने स्पष्ट रूप से निर्देश देने के बाद भी भारत में दलितों के उत्थान के लिए

- शेष पृष्ठ 6 पर

Continue from last issue :-

Glimpses of the SamaVeda

- Priyavrata Das

Three Flames of Life

The Supreme Lord here exhorts :
"O my son, your sound health without any disease is your first flame. Body remains healthy if the work of the fire is balanced. As the fire is the flame of the earth, the fire within the body is the flame of the body. Like a ripe fruit, healthy body is the beauty of the body. A healthy person meets death without experiencing any pain just as the wipened fruit falls from the tree naturally without any external force.'
"O my son, purity and strength of your mind is your second flame. This stability and joy make you resplendent. A person with mental strength can easily face any crisis in life even though his physical health is not well. Try to possess a pure mind like a clear moon'.
'O my son, just as the earth and the moon receive light from the sun, likewise the intellect, the third flame within you illuminates your body and mind. With the development of intellect, a person emits drightness by the light of knowledge.'
He whose body, mind and intellect are pure becomes the possesser of all divine qualities.

अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो।
अस्मे देहि जावेदो महि श्रवः।। (Sv.1561)
Agne vajasya gomata isanah sahaso yaho.
asme dehi javedo mahi srabah..

Two Announcements

The verse contains two opposite declarations : One by the Almighty God exhorting the soul from within and the other by the physical world alluring the body from without. Like a calf attracted by two cows, the soul is influenced by both the powers. The former proclaims, "I am the controller of the bounties of Nature, I am immortal governing all mortals. I am all-knowing and the supreme sustainer of the eternal laws. Do not be tempted by the gilded cover that hides the truth. I am Truth- incarnate.' The latter pulls the soul by the strong feelings of sense organs of the physical body through sound, sight, touch, taste and smell. The soul often fails to discriminate between the two as to who is the beneficient announcer indeed.
O Soul, your real guide and benefactor is seated in the precinct of your heart, invisible though. The visble physical world can give you temporary pleasure but not eternal bliss. Remember, climbing up a hill demands efforts, no doubt, but it leads you upwards. Descending needs no labour and results in utter degradation.

अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य नाम।
यो मा ददाति स इदेवमावदहमन्नमन्नमदन्तमद्मि।।
(Sv.594)
Aham asmi prathamaja rtasya purvam devebhyo amrtasya nama.
yo ma dadati sa idevamavad aham annam annam adantam admi..

Sense Organs

"O resplendent self, journeying in the chariot of the body, you have been fully provided with both nourishment and enjoyment through the sense organs. May your mind direct the chariot which has a container full of joy for the yoked horses. Now, O soul, may you put your horses under control."
"The sense organs had their sufficient enjoyment through the pleasure you have given to them. And under the thrill of joy, they have glorified you with flattering words. So, now, O resplendent self, it is time that you had put restraint on them."

स घा तं वृषणं रथमधि तिष्ठाति गोविदम्।
यः पात्रं हारियोजनं पूर्णमिन्द्रा चिकेतति योजान्विन्द्र ते हरी।।। (Sv.424)
Sa gha tam vrsanam ratham adhi tisthati govidam.
yah patram hariyojanam purnam indra ciketati yojanvindra te hari..

To be Conti....

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ – 14 : कारक

-आचार्य संदीप कुमार उपाध्याय

गतांक से आगे....

कारक
१ प्रथमा- कर्ता- ने
२. द्वितीया- कर्म- को
३. तृतीया- करण- से, के द्वारा
४. चतुर्थी- संप्रदान- को, के लिये
५. पंचमी- संबंध- का के की
६. षष्ठी- अपादान- में, पर
७. सप्तमी- संबोधन- हे अरे अहो

वचन-
एक-वचन, द्वि-वचन, बहु-वचन
कर्ता कर्म क्रिया
कर्ता- अकारन्त, (राम), आकारान्त, (सीता, माला गीता आदि)
कारक एक-वचन द्वि-वचन बहु-वचन
१ कर्ता रामः (राम ने) रामौ (दो रामों ने) रामाः (सब रामों ने)
२ कर्म रामं (राम को) रामौ (दो रामों को रामान्) (सब रामों को)
३ करण रामेण (राम के द्वारा) रामाभ्यां (दो रामों के द्वारा) रामैः (सब रामों के द्वार)
४ संप्रदान रामाय (राम को या राम के लिये) रामाभ्यां (दो रामों को या दो रामों के लिये) रामेभ्यः (सब रामों को या सब रमों के लिये)
५ संबंध रामात् (राम से, अलग होना) रामाभ्यां (दो रामों से, अलग होना) रामेभ्यः (सब रामों से या अलग होना)
६ अपादान रामस्य (राम का) रामयोः (दो रामों का) रामाणाम् (बहुत से रामों का)
७ संबोधन हे राम (हे राम!) हे रामौ (हे रामो लोगों!) हे रामाः (हे सब राम लोगों!)

पुरुष
पुरुष एक-वचन द्वि-वचन (बहु-वचन)
१ अन्य-पुरुष (वह) सः (वह) तौ (वे दोनों) ते (वे सब)
२ मध्यम-पुरुष (तुम या आप) तम (तुम) तौ (तुम दोनों) तान (तुम सब)
३ प्रथम-पुरुष (मैं) अहम (मैं) आवाम (हम दोनों) वयम (हम सब)

धातु या क्रिया

''पठ'' means **पढ़ना**
१ वह सः पठति (वह पढ़ता है) रामौ पठतः (दो राम पढ़ते हैं) रामाः पठन्ति (सब राम पढ़ते हैं)
२ तुम त्वं पठसि (तुम पढ़ते हो) युवां पठतः (तुम दोनों पढ़ते हो) युयम पठत (तुम सब पढ़ते हो)
३ अहं अहं पठामि (मैं पढ़ता हूँ।) आवाम पठावः (हम दोनों पढ़ते हैं।) वयम पठामः (हम सब पढ़ते हैं।)
उदाहरण- राम किताब पढ़ता है।- संस्कृत में अनुवाद करो। रामः पुस्तकं पठति।
तुम पुस्तक पढ़ते हो- त्वं पुस्तकम पठसि।
मै पुस्तक पढ़ता हूँ। अहं पुस्तकं पठामि।
इसी प्रकार अन्य कर्ता, कर्म और क्रिया को मिला कर संस्कृत सीख सकते हैं।
स्त्री-लिंग पुल्लिंग और नपुंसक लिंग भी के को शब्द है सबके लिये अलग-अलग नियम हैं।
वर्तमान कल, भूतकाल और भविष्यत काल सबके लिये लागू होता है।
पुल्लिंग- अकारान्त जैसे- राम, कृष्ण, हनुमान, मोहन, श्रीकांत, अचल आदि।
स्त्री-लिंग-आकारान्त जैसे- सीता, गीता, रमा, रंभा, मेनका, अचला, अबला आदि।
नपुंसक-लिंग- अकरान्त जैसे- फल, वन, जल, आदि।

पुल्लिंग-शब्द-तद् (वह)
एक-वचन द्वि-वचन बहु-वचन
१ सः (वह) तौ (वे दोनों) ते (वे सब)
२ तम् (उसको) तौ (उन दोनों को) तान् (उन सबको)
३ तेन् (उससे या उसके द्वारा) ताभ्यां (उन दोनों के द्वारा) तैः (न सबके द्वारा)
४ तस्मै (उसके लिये) ताभ्यां (उन दोनों के लिये) तेभ्यः (उन सब के लिये)
५ तस्मात् (उससे, अलग होना) ताभ्यां (उन दोनों से) तेभ्यः (उन सबसे)
६ तस्य (उसका) तयोः (उन दोनों का) तेषाम् (उन सबका)
७ तस्मिन् (उसमें, पर) तयोः (उन दोनों में) तेषु (उन सबमें)

स्त्री-लिंग-शब्द-तद् (वह)
१ सा ते ताः २ ताम् ते ताः
३ तया ताभ्यां ताभिः ४ तस्यै ताभ्यां ताभ्यः
५ तस्याः ताभ्यां ताभ्यः६ तस्याः तयोः तासाम्
७ तस्यां तयोः तासु
१ वह स्त्री या लड़की २ उसको ३ उससे या उसके द्वारा ४ उसके लिये ५ उसका ६ उसके ७ उसमें, पर

नपुंसक-लिंग-तद् (वह)
१ तत् ते तानि २ तत् ते तानि
३ तेन ताभ्यां तः ४ तस्मै ताभ्यां तेभ्यः
५ तस्मात् ताभ्यां तेभ्यः
६ तस्य तयोः तेषाम्
७ तस्मिन् तयोः तेषु
१ वह वस्तु २ उसको ३ उससे ४- उसके लिये ५ उससे ६ उसका ७ उसमें, पर
पुल्लिंग-''किम्'' शब्द (कौन)
१ कः कौ के
२ कम् कौ कान्
३ केन काभ्यां कैः
४ कस्मै काभ्यां केभ्यः
५ कस्मात् काभ्यां केभ्यः
६ कस्य कयोः केषां
७ कस्मिन् कयोः केषु
१.कौन २, किसको ३.किसके द्वारा ४. किसके लिये ५.किससे ६. किसका ७. किसमें या किस पर

स्त्री-लिंग ''किम्'' शब्द (कौन)
१ का के काः
२ कां के काः
३ कया काभ्यां काभिः
४ कस्यै काभ्यां काभ्यः
५ कस्याः काभ्यां काभ्यः
६ कस्याः कयोः कासां
७ कस्यां कयोः कासु
१. कौन २. किसको ३. किसके द्वारा ४. किसके लिये ५. किससे ६. किसका ७. किसमें या पर
मकारान्त नपुंसक-लिंग ''किम्'' शब्द (क्या)
१ किं के कानि
२ किं के कानि
३ केन काभ्यां कैः
४ कस्मै काभ्यां केभ्यः
५ कस्मात् काभ्यां केभ्यः
६ कस्य कयोः केषां
७ कस्मिन् कयोः केषु
१ कौन २. किसको ३. किसके द्वारा ४. किसके लिये,५. किससे ६. किसका ७. किसमें या किस पर इसी प्रकार अगले पाठ में हम वाक्य बनाना सीखेंगे।

- *क्रमशः*

पृष्ठ 5 का शेष

चलने वाली सभी संस्थाएं ईसाईयों के हाथों में है। उनका संचालन चर्च द्वारा होता है और उन्हें दिशा निर्देश विदेशों से मिलते हैं।

इस लेख के माध्यम से हमने यह सिद्ध किया है कि कैसे ईसाई मिशनरी दलितों को हिंदुओं के अलग करने के लिए पुरजोर प्रयास कर रही हैं। इनका प्रयास इतना सुनियोजित है कि साधारण भारतीयों को इनके षड्यंत्र का आभास तक नहीं होता। अपने आपको ईसाई समाज मधुर भाषी, गरीबों के लिए दया एवं सेवा की भावना रखने वाला, विद्यालय, अनाथालय, चिकित्सालय आदि के माध्यम से गरीबों की सहायता करने वाला दिखता है। मगर सत्य यह है कि ईसाई यह सब कार्य मानवता की सेवा के लिए नहीं अपितु इसे बनाने के लिए करता है। विश्व इतिहास से लेकर वर्तमान में देख लीजिये पूरे विश्व में कोई भी ईसाई मिशन मानव सेवा के लिए केवल धर्मान्तरण के लिए कार्य कर रहा है। यही खेल उन्होंने दलितों के साथ खेला है। दलितों को ईसाईयों की कठपुतली बनने के स्थान पर उन हिंदुओं का साथ देना चाहिए जो जातिवाद का समर्थन नहीं करते है। डॉ. अम्बेडकर ईसाईयों के कारनामों से भली भांति परिचित थे। इसीलिए उन्होंने ईसाई बनना स्वीकार नहीं किया था। भारत के दलितों का कल्याण हिन्दू समाज के साथ मिलकर रहने में ही है। इसके लिए हिन्दू समाज को जातिवाद रूपी सांप का फन कुचलकर अपने ही भाइयों को बिना भेद भाव के स्वीकार करना होगा।

आर्य समाज 'शहर' बड़ा बाजार सोनीपत का

100वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज 'शहर'बड़ा बाजार सोनीपत दिनांक 7 से 13 नवम्बर 2016 के मध्य 100वां वार्षिकोत्सव एवं शताब्दी समारोह सामुदायिक (कम्यूनिटी सेन्टर) नजदीक सैक्टर-14 मार्केट, सोनीपत में आयोजित कर रहा है। जिसके अन्तर्गत वेद रक्षा, परिवार रक्षा, आर्य समाज उन्नति, राष्ट्र रक्षा एवं युवा सम्मेलन, गौ, कृषि आदि रक्षा सम्मेलन एवं भ्रान्ति निवारण एवं संस्कृति रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अशोक गोयल (प्रधान) एवं मुख्य अतिथि महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच.) जी होंगे। *- प्रवीण आर्य*

7वां वरिष्ठ नागरिक सम्मान समारोह सम्पन्न

आर्य समाज हरीनगर घंटाघर दिल्ली का 7वां वरिष्ठ नागरिक सम्मान समारोह 2 अक्टूबर 2016 को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में युवा वर्ग ने अपने क्षेत्र के सभी वरिष्ठ नागरिकों (स्त्री-पुरुषों) का बैग व तौलिया भेंट कर सम्मान किया गया। इस अवसर पर आचार्य कुंवर पाल शास्त्री व देवराज 'आर्यमित्र' ने अपने भाषण में कहा कि 'आज बुजुर्ग और नौजवानों के बीच संवाद का अभाव होता जा रहा है। बुजुर्ग अपने आपको अकेला व उपेक्षित महसूस करते हैं। आज के युवा वृद्धाश्रम तो बनवा सकते हैं। परन्तु उनके जीवित रहते उनकी सेवा श्रुषुसा नहीं करते यह बड़ी बिडम्बना है युवाओं को इस ओर ध्यान देना चाहिए।'

कार्यक्रम के अन्त में सभा प्रधान श्रीमती राजेश्वरी आर्या ने सभी का धन्यवाद किया। *-मंत्री*

पं. अमर सिंह वाचस्पति जी द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार

आर्य समाज ब्यावर में राजस्थान के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. अमर सिंह वाचस्पति जी ने अगस्त, सितम्बर में सुमेरपुर (राज.) 26 से 28 अगस्त आर्य समाज वसई मुम्बई और 30 से 2 सितम्बर वर्धा जिला विदिशा (म.प्र.) में श्रद्धालुओं की अपार भीड़ के मध्य नन्नू लाल आर्य व सूर्य प्रकाश जी के सहयोग से वैदिक धर्म का प्रचार किया। *-मंत्री, ब्यावर*

यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं वेद प्रचारोत्सव

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, श्री गंगानगर आदर्श नगर पार्क में दिनांक 19 से 23 अक्टूबर 2016 के मध्य यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं वेद प्रचारोत्सव का आयोजन कर रहा है। *-वेद पाल गिरि*

प्रचार यात्रा

आर्य समाज सैक्टर 3,4,5,6 एवं विजय विहार रोहिणी, दिल्ली द्वारा अक्टूबर में अवन्तिका बाजार सैक्टर 1 रोहिणी में प्रचार यात्रा का आयोजन किया। इस अवसर पर वैदिक साहित्य (आर्य मान्यताएं एवं आत्मतत्त्व विवेचन) का निःशुल्क वितरयण किया गया। वेद प्रचार मण्डल उत्तरी पश्चिमी दिल्ली के प्रधान श्री सुरेन्द्र गुप्ता एवं कोषाध्यक्ष श्री ब्रत पाल भगत ने यात्रा में पहुंचकर सदस्यों का उत्साह वर्धन किया। भारतीय जनता पार्टी नरेला के अध्यक्ष श्री विजय पाल ने जलपान द्वारा सभी सदस्यों का स्वागत किया। *-सुरिन्द्र चौधरी, मंत्री*

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। *-सम्पादक*

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।

'मोपला'

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्त्वावधान में प्रतियोगिताओं का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की आर्य विद्या परिषद के तत्त्वावधान में एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल वैस्ट पंजाबी बाग, नई दिल्ली में बच्चों की विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन दिनांक 8 से 21 नवम्बर 2016 के मध्य किया जा रहा है-

1. **योगा :** 8 नवम्बर 2016 (बॉयज़) 9 नवम्बर 2016 (गर्ल्स)
2. **क्रिकेट (बॉयज़) :** 8 नवम्बर, 9 नवम्बर, 10 नवम्बर, 11 नवम्बर (फाईनल)
3. **रस्साकसी :** 11 नवम्बर 2016
4. **बैडमिण्टन :** 15 नवम्बर (बॉयज़), 16 नवम्बर (गर्ल्स), 17 नवम्बर (फाईनल)
5. **थ्रो बॉल :** 15 नवम्बर (बॉयज़), 16 नवम्बर (गर्ल्स), 17 नवम्बर (फाईनल)
6. **एथलेटिक :** 18 नवम्बर 2016 (बॉयज़), 19 नवम्बर 2016 (गर्ल्स)
7. **फन रेस :** 21 नवम्बर 2016 (बॉयज़ एण्ड गर्ल्स)

समय प्रातः 8 से दोपहर 12.30 बजे तक
अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें - श्री वी.के. रावत (9810253836)

- सुरेन्द्र रैली, प्रस्तोता (9810855965)

आर्यजन ध्यान दें

समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि यदि आपके कोई सम्बन्धी/रिश्तेदार/परिचित या आर्य विचारधारा से प्रेरित कोई व्यक्ति भारत के अन्दमान-निकोबार, लक्ष्यद्वीप या गोवा में रहते हैं अथवा नौकरी करते हैं तो कृपया उनका नाम, पता, दूरभाष तथा ईमेल हमें भेजने की कृपा करें ताकि उनसे सम्पर्क करके वहां आर्यसमाज की स्थापना का प्रयास किया जा सके। *-मन्त्री, सार्वदेशिक सभा*
ईमेल : aryasabha@yahoo.com

आवश्यकता है मैनेज़र/केयरटेकर की

धनश्री आसाम के 'महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन (सी.बी.एस.ई.) स्कूल' के लिए मैनेज़र/केयरटेकर की आवश्यकता है। आवास सुविधा, वेतन योग्यतानुसार देय। आजीवन पृष्ठभूमि एवं वानप्रस्थी पूर्ण सक्षम (अनुभवी महानुभाव को प्रथमिकता) अपना विवरण aryasabha@yahoo.com पर मेल करें या चेयरमैन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 पर भेजें। *- महामन्त्री*

वधू चाहिए

आर्य समाजी परिवार का संस्कारित युवक, उम्र 27 वर्ष, कद 6' जाति राजपूत, वायु सेना में ऑफीसर हेतु पी.एच.डी., बी.एड., एम.फिल कन्या चाहिये। सम्पर्क करें - 9717296647

मैनेज़र/केयरटेकर की आवश्यकता है

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ बामनिया मध्य प्रदेश के 'महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन आवासीय (सी.बी.एस.ई.) स्कूल' के लिए मैनेज़र/केयरटेकर की आवश्यकता है। आवास सुविधा, वेतन योग्यतानुसार देय। आजीवन पृष्ठभूमि एवं वानप्रस्थी पूर्ण सक्षम (अनुभवी महानुभाव को प्रथमिकता) अपना विवरण aryasabha@yahoo.com पर मेल करें या चेयरमैन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 पर भेजें। *- महामन्त्री*

वैचारिक क्रान्ति के लिए "सत्यार्थ प्रकाश" पढ़ें

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

शोक समाचार

श्री ललित चौधरी जी को पितृशोक

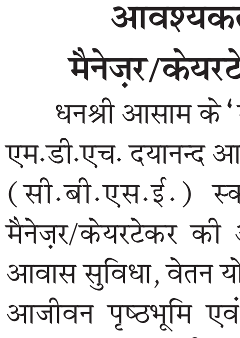

आर्य समाज विकासपुरी बाहरी रिंग रोड दिल्ली के संरक्षक एवं आर्य समाज के कर्मठ नेता श्री चन्द्र भान चौधरी जी का 91 वर्ष की अवस्था में दिनांक 14 अक्टूबर 2016 को निधन हो गया। वे अपने पीछे 3 बेटे व 2 बेटियों का भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। आर्य समाज बाहरी रिंग रोड प्रांगण में दिनांक 17 अक्टूबर को शान्तियज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजित किया गया, जिसमें दिल्ली के समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारी एवं समाज सेवी उपस्थित थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

संस्करण	आकार	मुद्रित मूल्य	प्रचारार्थ	
प्रचार संस्करण (अजिल्द)	23×36÷16	50 रु.	30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
विशेष संस्करण (सजिल्द)	23×36÷16	80 रु.	50 रु.	
स्थूलाक्षर सजिल्द	20×30÷8	150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 20/21 अक्टूबर, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 19 अक्टूबर, 2016

आर्य समाज टाण्डा के 125वें वर्ष पर शताब्दोत्तर रजत जयन्ती समारोह

(दिनांक 10, 11, 12, 13 और 14 नवम्बर 2016) में

देश–विदेश के अनेक आर्य बन्धु, आर्य नेता, राजनेता, विद्वान्–विदुषी पधार कर इस सम्मेलन की श्रीवृद्धि करेंगे। कृपया सम्मेलन में पधारने वाले महानुभाव अपने आने की सूचना यथाशीघ्र पूर्व में ही दें तथा समय पर पधार कर धर्मलाभ तथा ज्ञानलाभ प्राप्त करें एवं तन–मन–धन से सहयोग देकर कार्यक्रम को सफल बनावें।

: निवेदक :

आनन्द कुमार आर्य	रविचन्द्र आर्य	पं. दीनानाथ शास्त्री
प्रधान (9331866618)	मन्त्री (9454524499)	संयोजक(8004858413)
वीरेन्द्र आर्य	योगेश कुमार आर्य	अनूप कुमार आर्य
उप प्रधान(9415460200)	उपमंत्री	कोषाध्यक्ष

: समारोह स्थल :

आर्य समाज टाण्डा, जनपद अम्बेडकर नगर –224190

: दृष्टव्य :

समीप एअरपोर्ट–लखनऊ, वाराणसी

रेलवे स्टेशन–अकबरपुर–टाण्डा से 18 किमी. की दूरी पर

: सम्पर्क सूत्र :

05273–225299/222276, 09331866618, 099415460200, 08004858413

Email : anandkumararya75@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

आर्य समाज के कार्यकर्ताओ के लिये सम्मान का विषय
हिन्दी आन्दोलन के सत्याग्रहियों को स्वतन्त्रता सेनानी का दर्जा

आपको स्मरण होगा कि आर्य समाज के आह्वान पर हिंदी सत्याग्रह आन्दोलन 1957 में आर्य समाज के हजारो कार्यकर्ताओं/अधिकारियों ने भाग लिया था और जेल गए थे या यातनाये सहीं थीं। अब आपको जानकर गर्व होगा कि हरियाणा सरकार द्वारा हिंदी आन्दोलन के सत्याग्रह (1957) में भाग लेने वाले, जेल जाने वाले, यातना सहने वाले हरियाणा के ऐसे नागरिकों को हरियाणा सरकार स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा देकर उन्हें सम्मानित करने की योजना बनायी है। उनके उत्तराधिकारियों, परिवार के सदस्यों, सम्बन्धियों, तथा शुभेछुओं से अनुरोध है कि वे इस आन्दोलन से सम्बन्धित व्यक्तियों के बारे में जानकारी शीघ्रातिशीघ्र सभा कार्यालय को उपलब्ध करने का कष्ट करें ताकि हरियाणा सरकार की ऐसे महानुभावों को 'स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा' की योजना का लाभ उठाया जा सके।

आपके पास इस बारे में जो भी जानकारी/प्रमाण उपलब्ध हों, वे उपलब्ध करा देवें। सभा द्वारा सम्बन्धित जेल से प्रमाण लेने का प्रयास किया जायेगा। यह प्रयास आप स्वयं भी कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिए **सभा मन्त्री श्री शिवशंकर गुप्ता जी (9810505500)** पर सम्पर्क करें। आप अपने आवेदन निम्नांकित पते पर सीधे भी भेज सकते हैं तथा ईमेल भी कर सकते हैं–

उप–निदेशक, क्षेत्र शाखा, सूचना, जन संपर्क एवं भाषा विभाग,
चंडीगढ़ (हरि.) फोन : 0172–5059113, Email: dgiprharyana@yahoo.com

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर–घर–यज्ञ, हर–घर–यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर–परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें– – *सत्यप्रकाश आर्य 9650183335*

ARYAN FINANCE

UNIQUE LOANS :-

* Loan Against Property/LalDora
* C.C/O.D.Limit Above 1 Cr.+
* Negative Areas/3rd Floor
* NPA/Regect Cases
* H. Loan-Dual/Multi Units
* Week Cibil/Papers

Vivek Verma Arya
2917, Main Sarafa Bazar, Clock Tower, Delhi-110007
Mo. 9811618205 (24x7) E- mail : vivek_verma98@yahoo.com
(DSA & Sub DSA R Most Welcome)

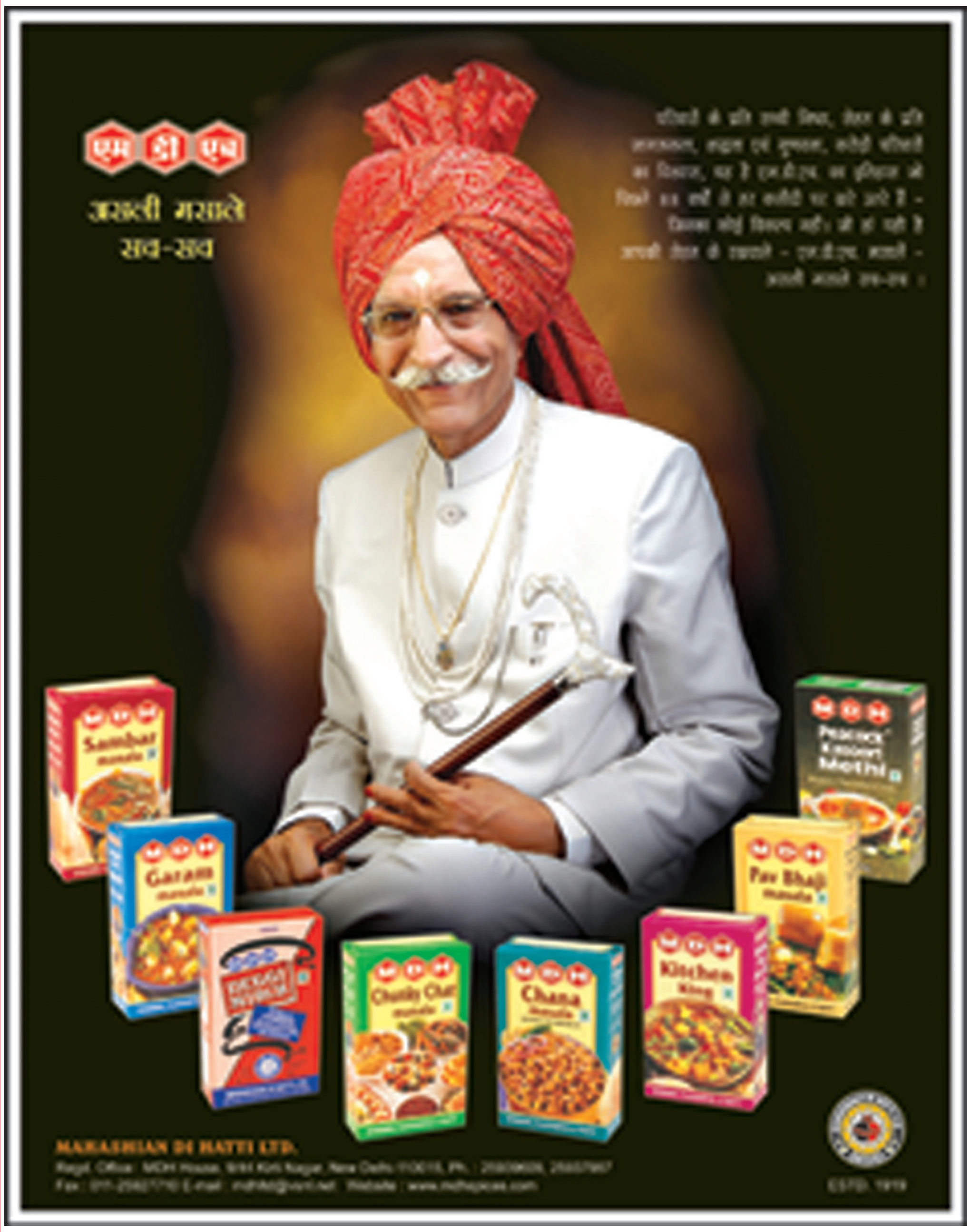

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह